समय कटु हो चला,

तिमिर न भेद पाये तुम।

काल-त्रिकाल सुकाल हुआ,

तटबंध वेग रुका नही।

तिमिर मानस प्राकट्य हुआ,

प्रकांड- प्रभात जीजिविषा।

श्लाघ्य कदम उद्वेल सा,

अगणित कदम माँ भारती।

जीव-प्राण तुम प्राण-प्रीतम,

मंद-सुमंद प्रबुद्धतम्।

किरण उबाल ले चूका,

लालिमा प्रतीत पंथ।

मन-प्रीत सा धवल-धरा,

आशीष दे माँ भारती।

राष्ट्र प्रबुद्ध संचाल से,

वागेश्वरी कृतार्थ हुई।

मानस उद्वेल निष्कपट,

संस्कृति-समृद्धि-संस्कार तुम।

काल-सुकाल श्लाघ्य हो,

त्रिकाल-पट धनुष-ध्वला।

माँ तुम अमर्त्य हो,

प्राण-प्रिय की साँस तुम।

तिमिर-भेद उद् बोध हुआ,

सूर्य किरण की मिठास तुम।

जीव-प्राण की आस ने,

जनम दिया, एक पाश को।

जिन पाश संग हम जी न सके,

उस जनम से ही प्रीत-भाव किया।

प्रीत-भाव की प्रीत ही न समझ सके,

तिन मन को ही विश्वास दिया।

जब विश्वास ही नियति बनी,

नियत ने ही विश्वास किया।

राष्ट्र सु-बेला नियत हो,

बेला ने पी को अंगीकार किया।

देश-धर्म की जीजिविषा,

राष्ट्र-धर्म को अपनाने दो।

जी से जीवन पूर्ण हुए,

जी कर तो जीवन गा